

18 अप्रैल 2024 : समाचार विश्लेषण

A. सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र 1 से संबंधित:

आज इससे संबंधित कुछ नहीं है।

B. सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र 2 से संबंधित:

आज इससे संबंधित कुछ नहीं है।

C. सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र 3 से संबंधित:

अर्थव्यवस्था:

1. खेतों में लगे पेड़ों से छोटे किसानों को कैसे लाभ हो सकता है?

D. सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र 4 से संबंधित:

आज इससे संबंधित कुछ नहीं है।

E. संपादकीय:

पर्यावरण:

1. ग्रेट इंडियन बस्टर्ड और जलवायु कार्रवाई का फैसला:

आपदा प्रबंधन:

1. भारत के 'हीट एक्शन प्लान' पर:

F. प्रीलिम्स तथ्य:

1. केंद्र ने ग्रीन क्रेडिट कार्यक्रम मानदंडों में बदलाव किया:
2. ईरान हमले के बाद इजराइल के पास 'खुद की रक्षा करने का अधिकार' सुरक्षित: नेतन्याहू
3. वर्ष 2024 में भारतीय अर्थव्यवस्था का 6.5% बढ़ने का अनुमान: अंकटाड

G. महत्वपूर्ण तथ्य:

आज इससे संबंधित कुछ नहीं है।

H. UPSC प्रारंभिक परीक्षा के लिए अभ्यास प्रश्न:

I. UPSC मुख्य परीक्षा के लिए अभ्यास प्रश्न:

सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र 3 से संबंधित:

खेतों में लगे पेड़ों से छोटे किसानों को कैसे लाभ हो सकता है?

अर्थव्यवस्था:

विषय: कृषि, देश के विभिन्न हिस्सों में मुख्य फसलें और फसल पैटर्न।

प्रारंभिक परीक्षा: कृषि वानिकी (Agroforestry)।

मुख्य परीक्षा: भारतीय कृषि के लिए कृषि वानिकी का महत्व।

प्रसंग:

- भारत में छोटे स्तर के किसानों को कृषि वानिकी प्रथाओं के लिए पानी और वित्तपोषण हासिल करने में चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।
- कृषि वानिकी, फसलों, पेड़ों और पशुधन को एकीकृत करने वाली एक विविध भूमि-उपयोग तकनीक, किसानों की आजीविका और पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ाने का वादा करती है।
- कृषि वानिकी, फसलों, पेड़ों और पशुधन को एकीकृत करने वाली एक विविध भूमि-उपयोग तकनीक, किसानों की आजीविका और पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ाने का वादा करती है।

कृषि वानिकी (Agroforestry):

- कृषि वानिकी पर्यावरणीय, आर्थिक और सामाजिक लाभ पैदा करने के लिए फसल और पशु पालन प्रणालियों में पेड़ों और झाड़ियों का जानबूझकर किया गया एकीकरण है।
- कृषि वानिकी से सम्बन्धित अधिक जानकारी के लिए निम्न लिंक पर क्लिक कीजिए:
[agroforestry](https://byjus.com/agroforestry)

कृषि वानिकी का ऐतिहासिक संदर्भ:

- भारत में कृषि में परंपरागत रूप से विविध दृष्टिकोण शामिल रहा है, जिसमें फसलों, पेड़ों और पशुधन को एकीकृत किया जाता है।
- एक तकनीक के रूप में कृषि वानिकी, हरित क्रांति ([Green Revolution](https://byjus.com/green-revolution)) से प्रेरित मोनोक्रॉपिंग प्रथाओं के दशकों के प्रभुत्व के बाद लोकप्रियता हासिल कर रही है।

केस स्टडी और कृषि वानिकी में बदलाव:

- इस लेख में तमिलनाडु की एक किसान चित्रा के मामले का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है, जिनके नारियल के बागान गाजा चक्रवात के बाद नष्ट हो गए थे। और खेतों की मिट्टी भी खारी हो गई थी।
- उन्होंने मिट्टी की उर्वरता को बहाल करने के लिए कटहल और आम के पेड़ लगाना शुरू कर दिया। अब वह अच्छी पैदावार और लाभप्रदता दर्ज कर रही हैं।
- यह बदलाव कृषिवानिकी की संभावित लाभप्रदता और इसे अपनाने के लिए एक सक्षम वातावरण बनाने की आवश्यकता को दर्शाता है।

राष्ट्रीय कृषि वानिकी नीति और चुनौतियाँ:

- भारत ने 2014 में राष्ट्रीय कृषिवानिकी नीति की स्थापना के साथ कृषिवानिकी को बढ़ावा देने के प्रयास शुरू किए।
- हालाँकि, कृषिवानिकी को अपनाना मध्यम और बड़े भूमिधारकों तक ही सीमित है, छोटे किसानों को लंबी गर्भधारण अवधि (पेड़ों को उस स्तर तक पहुंचने में लगने वाला समय है जहां वह परिणाम देना या फल देना शुरू कर सकता है), प्रोत्साहन की कमी और कमजोर बाजार संबंधों जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

टीओएफआई (TOFI) पहल:

- लेख में ट्रीज़ आउटसाइड ऑफ़ फॉरेस्ट्स इंडिया (Trees Outside of Forests India (TOFI)) पहल पर चर्चा की गई है, जो अमेरिकी अंतर्राष्ट्रीय विकास एजेंसी (यूएसएआईडी) और भारत के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय का एक संयुक्त प्रयास है।
- TOFI का लक्ष्य विस्तार के अवसरों की पहचान करके और प्रमुख बाधाओं को दूर करके सात भारतीय राज्यों में वृक्ष आवरण को बढ़ाना है।

जल उपलब्धता और प्रजाति चयन:

- पानी की उपलब्धता: कृषि वानिकी में लगे छोटे किसानों के लिए पानी की कमी एक महत्वपूर्ण चुनौती है, खासकर पौध रोपण के चरण के दौरान और पानी की कमी वाले क्षेत्रों में।
- संक्रमण वित्त: छोटे धारकों के पास कृषिवानिकी में निवेश करने के लिए वित्तीय संसाधनों की कमी है, जिससे ऋण पर निर्भरता होती है और अपनाने में बाधा आती है।

उपकरण और समाधान:

- लेख में पानी की उपलब्धता और पेड़-फसल संयोजनों के बीच समंजन का आकलन करने के लिए 'जलटोल' जैसे उपकरणों के अनुकूलन का उल्लेख किया गया है।
- कृषि वानिकी के लिए उपयुक्त देशी प्रजातियों की पहचान करने के लिए 'पुनर्स्थापना के लिए विविधता' जैसे निर्णय समर्थन उपकरण पर प्रकाश डाला गया है।

नीति सिफारिशें:

- इस लेख में छोटे धारकों द्वारा कृषिवानिकी अपनाने को प्रोत्साहित करने के लिए प्रणालीगत समर्थन और वित्तपोषण तंत्र, जैसे पारिस्थितिकी तंत्र क्रेडिट या पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं के लिए भुगतान (पीईएस) की आवश्यकता का सुझाव दिया गया है।
- यह क्षेत्रीय जैव-भौतिकीय परिवर्तनशीलता पर विचार करने और छोटे धारकों की भागीदारी के लिए आर्थिक व्यवहार्यता सुनिश्चित करने के महत्व पर जोर देता है।

निष्कर्ष:

- स्वस्थ पारिस्थितिकी तंत्र और लचीली आजीविका को बढ़ावा देने के लिए संरक्षणवादियों, कृषि-अर्थशास्त्रियों और नीति निर्माताओं के बीच कृषि वानिकी को एक कार्यप्रणाली या एक साथ रहने के तरीके के रूप में प्रस्तावित किया गया है।

सारांश:

- कृषि वानिकी छोटे पैमाने के किसानों के लिए अपनी आजीविका में सुधार करने और पर्यावरणीय स्थिरता में योगदान करने के लिए एक व्यवहार्य मार्ग प्रस्तुत करती है। पानी की उपलब्धता, वित्तपोषण बाधाओं को संबोधित करके और देशी प्रजातियों की विविधता को बढ़ावा देकर, नीति निर्माता छोटे धारकों के बीच कृषि वानिकी को व्यापक रूप से अपनाने, स्वस्थ पारिस्थितिकी तंत्र और लचीली आजीविका को बढ़ावा देने के लिए एक सक्षम वातावरण बना सकते हैं।

संपादकीय-द हिन्दू

संपादकीय:

ग्रेट इंडियन बस्टर्ड और जलवायु कार्रवाई का फैसला:

सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र 3 से संबंधित:

पर्यावरण:

विषय: पर्यावरण संरक्षण।

मुख्य परीक्षा: जैव विविधता संरक्षण बनाम जलवायु कार्रवाई।

प्रसंग:

- भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने हाल ही में जलवायु परिवर्तन के प्रतिकूल प्रभावों से मुक्त होने को मौलिक अधिकार (fundamental right) माना है।
- हालाँकि ग्रेट इंडियन बस्टर्ड (Great Indian Bustard) की सुरक्षा पर इसके प्रभाव पर बहुत ध्यान दिया गया है, लेकिन समावेशी जलवायु कार्रवाई के परिप्रेक्ष्य से व्यापक विश्लेषण पेश करने की आवश्यकता है।
- हालाँकि ग्रेट इंडियन बस्टर्ड की सुरक्षा पर इसके प्रभाव पर बहुत ध्यान दिया गया है, लेकिन समावेशी जलवायु कार्रवाई के परिप्रेक्ष्य से व्यापक विश्लेषण प्रस्तुत करने की आवश्यकता है।

अधिकार की मान्यता:

- इस मामले में मुख्य रूप से भारत के नवीकरणीय ऊर्जा लक्ष्यों के साथ गंभीर रूप से लुप्तप्राय ग्रेट इंडियन बस्टर्ड के संरक्षण को संतुलित करना शामिल था।
- न्यायालय ने शुरू में बस्टर्ड निवास स्थान की रक्षा के लिए ओवरहेड बिजली लाइनों पर प्रतिबंध लगाया था, लेकिन बाद में आदेश को संशोधित किया और एक वैज्ञानिक समिति को स्थिति का पुनर्मूल्यांकन करने का काम सौंपा।
- न्यायालय ने जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के खिलाफ अधिकार के अस्तित्व को मान्यता दी, लेकिन भविष्य में चर्चा और विकास के लिए जगह छोड़ते हुए इसे पूरी तरह से स्पष्ट करने से परहेज किया।
- पर्यावरणीय मामलों में अधिकारों को स्पष्ट करने की न्यायालय की सामान्य प्रथा से यह विचलन एक सतर्क दृष्टिकोण का सुझाव देता है, जो समय के साथ अधिकार की अधिक जानकारीपूर्ण समझ की अनुमति देता है।

केवल संक्रमण संरचना (Just Transition Framework):

- फैसले ने इस मुद्दे को जैव विविधता (biodiversity) संरक्षण और जलवायु कार्रवाई के बीच एक संघर्ष के रूप में पेश किया, जो एक प्रतिकूल संबंध दर्शाता है।
- अधिवक्ता बस्टर्ड जैसे प्रभावित पक्षों के हितों को ध्यान में रखते हुए, जलवायु परिवर्तन को अधिक न्यायसंगत बनाने के लिए उचित संक्रमण ढांचे को अपनाने का सुझाव देते हैं।
- इस ढांचे का उद्देश्य जलवायु कार्रवाई और जैव विविधता संरक्षण को विरोधी उद्देश्यों के रूप में देखे जाने से रोकना है और विविध अधिकारों और हितों के प्रति संवेदनशील समावेशी जलवायु कार्रवाई को बढ़ावा देना है।
- अंतिम निर्णय में इस ढांचे को लागू करने से जलवायु मुकदमेबाजी में गैर-मानवीय हितों पर विचार करने के लिए एक मिसाल कायम हो सकती है, जो न्यायसंगत संक्रमण अवधारणा के विकास में योगदान देगी।

साझा जिम्मेदारी और भविष्य की दिशाएँ:

- लंबित अंतिम निर्णय न्यायपालिका के लिए जलवायु कार्रवाई नीति में उचित परिवर्तन ढांचे को शामिल करने का अवसर प्रस्तुत करता है।
- जलवायु परिवर्तन के खिलाफ अधिकार की मान्यता राज्य, कार्यकर्ताओं, वादियों और शिक्षाविदों सहित हितधारकों को जलवायु अधिकारों की अभिव्यक्ति और प्रवर्तन में योगदान करने के लिए एक मंच प्रदान करती है।
- समावेशी और प्रभावी जलवायु कार्रवाई को आकार देने का भार इसमें शामिल सभी पक्षों पर पड़ता है, जो जलवायु परिवर्तन शमन और अनुकूलन के आसपास चल रहे प्रवचन में सहयोगात्मक प्रयासों के महत्व पर जोर देता है।

सारांश:

- भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के खिलाफ एक अधिकार को स्वीकार किया, जिससे समावेशी जलवायु कार्रवाई के व्यापक विश्लेषण को बढ़ावा मिला। नवीकरणीय ऊर्जा लक्ष्यों के साथ जैव विविधता संरक्षण को संतुलित करते हुए, निर्णय का सतर्क दृष्टिकोण इस विकसित हो रहे अधिकार को स्पष्ट करने पर चर्चा को आमंत्रित करता है।

भारत के 'हीट एक्शन प्लान' पर:

सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र 3 से संबंधित:

आपदा प्रबंधन:

विषय: आपदा एवं आपदा प्रबंधन।

मुख्य परीक्षा: हीटवेव: निहितार्थ एवं उपचार।

प्रसंग:

- आईएमडी (IMD) से और से गर्मी की चेतावनी आमतौर पर गर्मियों के मौसम में जारी की जाती है, लेकिन इस साल इन चतवनियों को जारी करने की शुरुआत फरवरी की में ही शुरू हो गई।

- पूर्वोत्तर और पश्चिमी भारत के कुछ हिस्सों में गर्मी से पहले तापमान सामान्य से 3.1-5 डिग्री सेल्सियस अधिक रहा।
- आईएमडी ने पूर्वी और दक्षिणी भारत में अधिकतम तापमान बढ़ने और लू चलने (heatwaves) की भविष्यवाणी की है।
- उपरोक्त घटनाक्रम इस खतरे और इसके प्रभाव का सामना करने के लिए भारत की तैयारी पर सवाल उठाता है।

भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) द्वारा हीटवेव की परिभाषा:

- आईएमडी द्वारा क्षेत्रीय भूगोल के आधार पर हीटवेव को परिभाषित किया जाता है।
- इसके मानदंड में मैदानी इलाकों में अधिकतम तापमान 40°C या अधिक, तटीय क्षेत्रों में 37°C या अधिक और पहाड़ी क्षेत्रों में 30°C या अधिक शामिल हैं।
- "सामान्य लू/हीट वेव्स" के लिए 4.5-6.4 डिग्री सेल्सियस के विचलन और "गंभीर लू/हीट वेव्स" के लिए अधिक विचलन के लिए "गंभीर" वर्गीकरण के साथ सामान्य तापमान से विचलन से गंभीरता का आकलन किया जाता है।
- चरम मामलों के लिए, यदि अधिकतम तापमान 45°C से अधिक हो जाता है तो लू की घोषणा की जाती है, और यदि यह 47°C से अधिक हो जाता है तो गंभीर लू की घोषणा की जाती है।

हीट एक्शन प्लान (एचएपी) और उनकी सिफारिशें:

- एचएपी का लक्ष्य तैयारी रणनीतियों के माध्यम से हीटवेव के प्रतिकूल प्रभावों को कम करना है।
- सिफारिशों में प्रारंभिक चेतावनी प्रणाली, सार्वजनिक शिक्षा अभियान और ताप आश्रयों और शीतलन केंद्रों की स्थापना शामिल है।
- अस्पतालों को सलाह दी जाती है कि वे गर्मी से संबंधित बीमारियों के इलाज के लिए आपूर्ति का स्टॉक रखें और कर्मचारियों को प्रशिक्षित करें।

- दीर्घकालिक उपायों में हरित स्थानों, गर्मी प्रतिरोधी निर्माण सामग्री और ठंडी छत प्रौद्योगिकियों के लिए शहरी नियोजन शामिल है।

एचएपी को लागू करने में चुनौतियाँ और कमजोरियाँ:

- स्थानीय संदर्भ और क्षेत्रीय विविधताएँ: वर्तमान राष्ट्रीय हीटवेव सीमाएं शहरी ताप द्वीपों (urban heat islands) और आर्द्रता जैसे स्थानीय कारकों को नजरअंदाज करती हैं। एचएपी को विविध जलवायु परिस्थितियों और जनसांख्यिकी को समायोजित करने के लिए अनुकूलन की आवश्यकता है।
- असंगत तरीके: एचएपी में भेद्यता आकलन में स्थिरता का अभाव है, जिसके लिए व्यापक जलवायु जोखिम आकलन और हॉटस्पॉट मैपिंग में बदलाव की आवश्यकता है।
- कमज़ोर आबादी: कमज़ोर समूहों को प्राथमिकता देते समय, एचएपी में विशेष रूप से अनौपचारिक श्रमिकों के लिए सामाजिक-आर्थिक मतभेदों पर विचार करते हुए लक्षित हस्तक्षेप का अभाव है।
- संसाधन आवंटन और एकीकरण: अलग-अलग प्राथमिकताओं और क्षमताओं के कारण असंगत कार्यान्वयन के लिए समर्पित बजट और व्यापक शहरी लचीलेपन और जलवायु अनुकूलन योजनाओं के साथ एचएपी के एकीकरण की आवश्यकता होती है।

सारांश:

- भारत मौसम विज्ञान विभाग क्षेत्रीय तापमान के आधार पर हीटवेव को परिभाषित करता है। हीट एक्शन प्लान प्रारंभिक चेतावनी प्रणालियों, आश्रयों और स्वास्थ्य देखभाल की तैयारी की सलाह देते हैं। कमज़ोर समुदायों के लिए लक्षित हस्तक्षेप, क्षेत्रीय विविधताओं और सामाजिक-आर्थिक मतभेदों को संबोधित करना, प्रभावशीलता के लिए महत्वपूर्ण हैं।

प्रीलिम्स तथ्य:

1. केंद्र ने ग्रीन क्रेडिट कार्यक्रम मानदंडों में बदलाव किया:

प्रसंग:

- ग्रीन क्रेडिट कार्यक्रम (Green Credit Programme (GCP)), जिसका उद्देश्य हरित क्रेडिट के लिए निम्नीकृत वन भूमि में वनीकरण परियोजनाओं को प्रोत्साहित करना है, पारिस्थितिकी तंत्र बहाली पर वित्तीय लाभ को प्राथमिकता देने की चिंताओं पर जांच का सामना करना पड़ रहा है।
- केंद्रीय पर्यावरण मंत्रालय कार्यक्रम के ढांचे में पारिस्थितिकी तंत्र की बहाली पर जोर देकर इन चिंताओं को दूर करना चाहता है।

उद्देश्य और चिंताएँ:

- जीसीपी का लक्ष्य निम्नीकृत वन भूमि पर वनीकरण और पारिस्थितिकी तंत्र की बहाली को प्रोत्साहित करना है।
- चिंताएँ व्यक्त की गई हैं कि कार्यक्रम पारिस्थितिकी तंत्र की बहाली के बजाय केवल वित्तीय लाभ के लिए वृक्षारोपण को बढ़ावा दे सकता है।

कार्यक्रम अवलोकन:

- 13 राज्यों के वन विभागों ने पुनर्स्थापना के लिए खराब हुई वन भूमि के 387 भूखंडों की पेशकश की है, जो कुल मिलाकर लगभग 10,983 हेक्टेयर है।
- व्यक्ति और कंपनियां इन वनों की बहाली के लिए भुगतान करने के लिए भारतीय वानिकी अनुसंधान और शिक्षा परिषद (आईसीएफआरई) में आवेदन कर सकती हैं।
- वास्तविक वनीकरण कार्य राज्य वन विभागों द्वारा किया जाएगा।

ग्रीन क्रेडिट:

- रोपण के दो साल बाद, लगाया गया प्रत्येक पेड़ एक 'ग्रीन क्रेडिट' के लायक हो सकता है, जिसका मूल्यांकन आईसीएफआरई द्वारा किया जाता है।

ग्रीन क्रेडिट की व्यापार योग्यता:

- वर्तमान में, ग्रीन क्रेडिट व्यापार योग्य नहीं हैं, लेकिन जीसीपी के अधिसूचित नियम बताते हैं कि वे भविष्य में घरेलू बाजार मंच पर व्यापार योग्य होंगे।
- ग्रीन क्रेडिट का उपयोग संभावित रूप से कार्बन क्रेडिट प्राप्त करने के लिए भी किया जा सकता है यदि वे कार्बन उत्सर्जन में मापने योग्य कमी का कारण बनते हैं।

दिशानिर्देश और परिवर्तन:

- पर्यावरण मंत्रालय ने बिगड़े वन परिदृश्यों को बहाल करने की लागत की गणना करने के लिए राज्यों के लिए दिशानिर्देश जारी किए हैं।
- प्रति हेक्टेयर न्यूनतम 1,100 पेड़ों की पिछली आवश्यकता को हटा दिया गया है, और राज्य अब अपने स्वयं के मानदंड निर्दिष्ट कर सकते हैं।
- स्वदेशी प्रजातियों को प्राथमिकता दी जाती है, और प्राकृतिक रूप से उगने वाले पौधों को बरकरार रखा जाएगा।

भागीदारी और पायलट चरण:

- इंडियन ऑयल, पावर ग्रिड कॉर्पोरेशन और कोल इंडिया सहित कई सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियों ने कार्यक्रम में निवेश करने के लिए पंजीकरण कराया है।
- यह कार्यक्रम वर्तमान में एक पायलट परियोजना मोड में है, और ग्रीन क्रेडिट के लिए झाड़ियों और घासों की मात्रा निर्धारित करने जैसे विवरणों पर अभी भी काम किया जा रहा है।

दायित्व और तुल्यता:

- कंपनियाँ हरित क्रेडिट का उपयोग करके अपने सभी प्रतिपूरक वनीकरण दायित्वों की भरपाई करने में सक्षम नहीं हो सकती हैं, लेकिन एक हिस्से का दावा कर सकती हैं। ग्रीन क्रेडिट और कार्बन क्रेडिट के बीच समानता पर भी चर्चा चल रही है।

2. ईरान हमले के बाद इजराइल के पास 'खुद की रक्षा करने का अधिकार' सुरक्षित: नेतन्याहू

प्रसंग:

- इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने मिसाइल और ड्रोन हमले के बाद ईरान के साथ बढ़ते तनाव के बीच खुद की रक्षा करने के इजरायल के अधिकार पर जोर दिया है।
- अंतर्राष्ट्रीय समुदाय जिसका प्रतिनिधित्व संयुक्त राज्य अमेरिका, यूरोपीय संघ (European Union) और पश्चिमी दूतों द्वारा किया गया ने इस क्षेत्र में आगे तनाव में वृद्धि को रोकने के लिए संयम बरतने का आग्रह किया है।

समस्याएँ:

- ईरान-इज़राइल तनाव: इसराइल पर ईरान के अभूतपूर्व मिसाइल और ड्रोन हमले और इसराइल द्वारा जवाब देने की प्रतिज्ञा से पहले से ही अस्थिर क्षेत्र में तनाव बढ़ गया है।
- कूटनीतिक प्रयास: ईरान के खिलाफ राजनयिक चैनलों और प्रतिबंधों के माध्यम से स्थिति को कम करने और आगे के संघर्ष को रोकने के लिए अंतर्राष्ट्रीय प्रयास।

महत्व:

- ईरान और इज़राइल के बीच बढ़ते तनाव क्षेत्रीय स्थिरता के लिए खतरा पैदा करते हैं और अंतरराष्ट्रीय सुरक्षा पर व्यापक प्रभाव डालते हैं।
- आगे की स्थिति को रोकने और शांति को बढ़ावा देने के लिए राजनयिक हस्तक्षेप और मापी गई प्रतिक्रियाएँ महत्वपूर्ण हैं।

समाधान:

- कूटनीतिक संवाद: अंतर्राष्ट्रीय समुदाय के समर्थन से ईरान और इज़राइल के बीच संवाद और बातचीत को सुविधाजनक बनाने के लिए राजनयिक चैनलों के माध्यम से निरंतर जुड़ाव।

- संयम और तनाव कम करना: दोनों पक्षों से संयम बरतने और ऐसी कार्रवाइयों से बचने का आग्रह किया गया, जिनसे संघर्ष और बढ़ सकता है, बातचीत को प्राथमिकता दी जाए और संघर्षों का शांतिपूर्ण समाधान किया जाए।

अंतराष्ट्रीय प्रतिबंध:

- आक्रामक व्यवहार को रोकने और अंतरराष्ट्रीय मानदंडों और दायित्वों के अनुपालन को प्रोत्साहित करने के लिए ईरान के खिलाफ प्रतिबंधों को मजबूत करना।
- क्षेत्रीय स्थिरता के उपाय: पड़ोसी देशों के बीच तनाव को कम करने और विश्वास बनाने के लिए क्षेत्रीय सहयोग और विश्वास-निर्माण उपायों को बढ़ावा देना।

3. वर्ष 2024 में भारतीय अर्थव्यवस्था का 6.5% बढ़ने का अनुमान: अंकटाड

प्रसंग:

- व्यापार और विकास पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन (United Nations Conference on Trade and Development (UNCTAD)) का अनुमान है कि भारत की अर्थव्यवस्था 2024 में 6.5% की दर से बढ़ेगी, जिससे वैश्विक स्तर पर सबसे तेजी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्था के रूप में इसकी स्थिति बरकरार रहेगी।
- रिपोर्ट में बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा भारत में विनिर्माण प्रक्रियाओं का विस्तार करके अपनी आपूर्ति श्रृंखलाओं में विविधता लाने के देश के निर्यात पर सकारात्मक प्रभाव पर प्रकाश डाला गया है।

भारतीय आर्थिक विकास:

- वर्ष 2023 में 6.7% की वृद्धि दर के बाद, 2024 में भारत की अर्थव्यवस्था 6.5% बढ़ने का अनुमान है।
- 2023 में वृद्धि मजबूत सार्वजनिक निवेश और सेवा क्षेत्र द्वारा संचालित थी, जो मजबूत स्थानीय और बाहरी मांग द्वारा समर्थित थी।

- UNCTAD रिपोर्ट बताती है कि भारत की अर्थव्यवस्था 2024 में दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ने वाली प्रमुख अर्थव्यवस्था बनी रहेगी।

बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ और विनिर्माण:

- चीन की तरह बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा अपनी आपूर्ति श्रृंखलाओं में विविधता लाने के लिए भारत में अपनी विनिर्माण प्रक्रियाओं का विस्तार करने की प्रवृत्ति बढ़ रही है।
- इस बदलाव से भारतीय निर्यात पर सकारात्मक प्रभाव पड़ने की उम्मीद है, खासकर वैश्विक कमोडिटी की कीमतों में नरमी के कारण।
- चीन की अर्थव्यवस्था 2024 में 4.9% बढ़ने का अनुमान है, लेकिन बाहरी अनिश्चितताओं, आवास बाजार के मुद्दों और कम खपत जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है।
- अंकटाड रिपोर्ट इस बात पर प्रकाश डालती है कि जहां चीन और भारत सहित कुछ अर्थव्यवस्थाएं 2023 में वित्तीय परेशानियों से बच गईं, वहीं व्यापार व्यवधान, जलवायु परिवर्तन, कम विकास, कम निवेश और असमानताएं जैसी चुनौतियां बढ़ रही हैं।
- आईएमएफ (IMF) का अनुमान है कि घरेलू मांग और बढ़ती कामकाजी उम्र की आबादी के कारण भारत की विकास दर 2024 में 6.8% और 2025 में 6.5% रहेगी।

समस्याएँ:

- वैश्विक आर्थिक आउटलुक: वैश्विक आर्थिक अनिश्चितताओं के बीच, भारत की आर्थिक वृद्धि के अनुमान इसकी लचीलापन और क्षमता का आकलन करने के लिए महत्वपूर्ण हैं।
- विकास को गति देने वाले कारक: सार्वजनिक निवेश, सेवा क्षेत्र की जीवन शक्ति और बाहरी मांग सहित भारत की आर्थिक वृद्धि के पीछे के कारकों को समझना नीति निर्माण के लिए आवश्यक है।

समाधान:

- सार्वजनिक निवेश बढ़ाना: बुनियादी ढांचे, स्वास्थ्य देखभाल और शिक्षा में सार्वजनिक निवेश पर निरंतर जोर आर्थिक विकास को प्रोत्साहित कर सकता है और रोजगार के अवसर पैदा कर सकता है।
- सेवा क्षेत्र को बढ़ावा देना: सेवा क्षेत्र, विशेष रूप से व्यावसायिक सेवा निर्यात को आगे बढ़ाने से बाहरी मांग का लाभ उठाया जा सकता है और आर्थिक विकास को बढ़ावा मिल सकता है।
- विदेशी निवेश को आकर्षित करना: बहुराष्ट्रीय कंपनियों के लिए भारत में विनिर्माण में निवेश करने और आपूर्ति श्रृंखलाओं में विविधता लाने के लिए अनुकूल माहौल बनाना निर्यात को बढ़ावा दे सकता है और आर्थिक विस्तार में योगदान दे सकता है।
- नीति स्थिरता: नीति स्थिरता सुनिश्चित करना और व्यापार करने में आसानी में सुधार के लिए संरचनात्मक सुधारों को लागू करना निवेशकों का विश्वास बढ़ा सकता है और स्थायी आर्थिक विकास को बढ़ावा दे सकता है।

महत्वपूर्ण तथ्य:

आज इससे संबंधित कुछ नहीं है।

UPSC प्रारंभिक परीक्षा के लिए अभ्यास प्रश्न:

प्रश्न 1. ग्रेट इंडियन बस्टर्ड के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. यह उत्तर पश्चिमी मैदानों के लिए विशिष्ट है।
2. यह राजस्थान का राज्य पक्षी है।
3. भारतीय वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 की अनुसूची I में सूचीबद्ध हैं।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) उपरोक्त में से कोई नहीं

(d) सभी तीन

उत्तर: d

व्याख्या:

- सभी कथन सही हैं।

प्रश्न 2. ग्रीन क्रेडिट योजना के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. यह सरकार के पर्यावरण के लिए जीवन शैली (LiFE) आंदोलन के अंतर्गत एक पहल है।
2. पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (एमओईएफसीसी) जीसीपी प्रशासक के रूप में कार्य करता है।

निम्नलिखित कूट का प्रयोग कर सही उत्तर का चयन कीजिए:

- (a) केवल 1
- (b) केवल 2
- (c) न तो 1 और न ही 2
- (d) 1 और 2 दोनों

उत्तर: a

व्याख्या:

- भारतीय वानिकी अनुसंधान और शिक्षा परिषद (ICFRE) GCP प्रशासक के रूप में कार्य करती है।

प्रश्न 3. दक्षिण-पश्चिम एशिया का निम्नलिखित में से कौन सा देश भूमध्य सागर तक विस्तृत नहीं है?

- (a) सीरिया
- (b) जॉर्डन
- (c) लेबनान
- (d) इजराइल

उत्तर: b

व्याख्या:

- जॉर्डन का विस्तार भूमध्य सागर तक नहीं है।

प्रश्न 4. ऊष्मा तरंगों के सम्बन्ध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. हीटवेव अत्यधिक गर्म मौसम की अवधि है, जिसमें समय-समय पर उच्च आर्द्रता होती है।
2. भारत आपदा प्रबंधन अधिनियम के तहत गर्मी की लहरों को आपदा के रूप में मान्यता नहीं देता है।
3. स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव में निर्जलीकरण, गर्मी की ऐंठन, गर्मी की थकावट और हीट स्ट्रोक शामिल हैं।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) उपरोक्त में से कोई नहीं
- (d) सभी तीन

उत्तर: d

व्याख्या:

- सभी कथन सही हैं।

प्रश्न 5. निम्नलिखित में से किस कथन को कृषि वानिकी के लाभ के रूप में माना जा सकता है:

1. कृषि वानिकी प्रणालियों में पारंपरिक कृषि प्रणालियों की तुलना में अधिक जैव विविधता है।
2. अनुपस्थित जमींदार भूमि का स्वामित्व बरकरार रखने और अपनी आय बढ़ाने के लिए कृषि वानिकी अपनाते हैं।
3. पारिवारिक श्रम की उपलब्धता के बिना भी कृषि भूमि का प्रबंधन करना।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल दो
- (b) केवल तीन
- (c) केवल चार
- (d) सभी पांच

उत्तर: d

व्याख्या:

- सभी कथन सही हैं।

UPSC मुख्य परीक्षा के लिए अभ्यास प्रश्न:

प्रश्न 1. भारत में एक स्थायी भूमि-उपयोग अभ्यास के रूप में कृषिवानिकी के महत्व पर चर्चा कीजिए। वर्ष 2014 की राष्ट्रीय कृषिवानिकी नीति की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करें साथ ही कृषिवानिकी प्रथाओं को अपनाने में छोटे किसानों के सामने आने वाली चुनौतियों का परिक्षण भी कीजिए। (20 अंक, 250 शब्द) (सामान्य अध्ययन - III, अर्थव्यवस्था) (Discuss the significance of agroforestry as a sustainable land-use practice in India. Evaluate the effectiveness of the National Agroforestry Policy of 2014 and examine the challenges faced by smallholder farmers in adopting agroforestry practices. (15 marks, 250 words) [GS-3, Environment])

प्रश्न 2. अल्पकालिक और दीर्घकालिक उपायों सहित एचएपी के घटकों का मूल्यांकन करते हुए उनके कार्यान्वयन में आने वाली चुनौतियों का विश्लेषण कीजिए। (20 अंक, 250 शब्द) (सामान्य अध्ययन - III, पर्यावरण) (Evaluate the components of HAPs, including short-term and long-term measures, and analyze the challenges faced in their implementation. (15 marks, 250 words) [GS-3, Environment])

(नोट: मुख्य परीक्षा के अंग्रेजी भाषा के प्रश्नों पर क्लिक कर के आप अपने उत्तर **BYJU'S** की वेब साइट पर अपलोड कर सकते हैं।)